शोध–प्रभा (ISSN : 0974-8946)
(A REFERRED & PEER- REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

''मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक रुचि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन''

शहरोज़ आलम
शोधार्थी

डॉ0 भूपेन्द्र कौर
सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

सारांश

शिक्षा बालक की सर्वांगीण उन्नति का अतिउत्तम साधन है। उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का सोपान है। शिक्षा बालक में अन्तर्निहित शक्तियों को उभारकर उन्हें पूर्ण विकसित करती है। यह वह ज्ञान है जो बालक रूपी हीरे की क्रश्मल रूपी बुराईयों को दूर कर उसके आन्तरिक गुणों को जगमगा देती है, जिसके प्रकाश में बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और समाज को भी लाभ पहुँचाता है। शिक्षा बालक के व्यवहार का परिष्कार करती है। यह परिष्कार बालक और समाज दोनों के लिए उपयोगी होती है। प्राचीन काल में शिक्षा का अर्थ बालक के मस्तिष्क को ज्ञान से भरना था। किसी भी लोकतंत्रीय राश्ट्र की प्रगति के लियें वहाँ की प्रजा के लिए विशेष प्रबन्ध किये जाने चाहिए जो सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। लोकतांत्रिक समता का सिद्धान्त तभी काम कर सकता है जब पूरा राश्ट्र यथासम्भव एक ही स्तर पर आ जाये । लेकिन भारत वर्श में आज भी पूरा समाज कई वर्गों तथा समुदायों में विभाजित है। जिससे एक मुस्लिम समाज दूसरा गैर मुस्लिम समाज है। आंकड़ों के संकलन करने के उपरान्त प्रस्तुत लघु भाोध के निम्न निश्कर्श पाये गये–मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

मुख्य शब्द – मुस्लिम बालिकाएं, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक रुचि

प्रस्तावना

घर छात्रों की प्रथम पाठशाला है। घर ही वह स्थान है जहाँ वे महान गुण उत्पन्न होते है, जिनकी सामान्य विशेषता सहानुभूति है। घर में ही घनिष्ठ प्रेम की भावनाओं का विकास होता है। यही छात्र उदार एवं अनुदार निःस्वार्थ और स्वार्थ, न्याय और अन्याय सत्य और असत्य परिश्रम और आलस्य में अन्तर मिलता है। औपचारिक साधन के रूप में परिवार छात्रों के शिक्षित करने का सदैव से एक मुख्य साधन रहा है। घर का वातावरण माता–पिता के आपसी सम्बन्ध व छात्रों में उनके व्यवहारों का छात्रों

के व्यक्तित्व व अन्य रुचियों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इस दिशा में किये गये विभिन्न शोधो से उपर्युक्त एक तथ्य के रूप से स्थापित है कि घर में अविभावक छात्रों को जिस प्रकार के अनुशासन में रखेगे छात्रों का व्यक्तित्व उसी प्रकार के वातावरण से प्रभावित होता है। इसलिए छात्रों के पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षिक रुचि पर उनके वातावरण के प्रभाव को जानने के लिए छात्रों के घर के घर के पारिवारिक वातावरण अनुशासन को जानना अतिआवश्यक है। जिनमें 1. एकाधिकारवादी विचारधारा। 2. जनतान्त्रिक विचारधारा। 3. हस्तक्षेप रहित विचारधारा सम्मिलत है। शिक्षा के अनुसार अनुशासन की ये विचार धाराये अध्यापकों तथा अभिभावकों दोनो के लिए लागू होती है। परन्तु छात्र के दृष्टिकोण से अभिभावक द्वारा लागू की गयी परिवार के अनुशासन प्रणाली महत्वपूर्ण है। अध्यापक उस अनुशासन का पालन करते है जो उनके घर की व्यवस्था को सुचारू बनाये रखने तथा छात्रों के विकास की दृष्टि से उपयोगी हो जिससे उनकी भौक्षिक रुचि को प्रभावित होने से रोका जायेगा।

आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत लघु शोध शैक्षिक मनौवैज्ञानिक व सामाजिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। निम्न पंक्तियों में इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत लघु शोध शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो छात्रो में वॉछित व्यवहार उत्पन्न करती है। इन वॉदि व्यवहारों को उत्पन्न करने के लिए औपचारिक व अनौपचारिक संसाधानो का प्रयोग किया जाता है। परिवार को शिक्षा का एक औपचारिक साधन माना जाता है। अन्य परिभाषा के अनुसार 'शिक्षा बाल की अन्तर्निहित योग्यताओं के विकास की प्रक्रिया है'। बच्चा एक छोटे पौधे की भाँति होता है। उसे फलने फूलने के लिए जितना खुला व स्वाभाविक वातावरण मिलेगा वह उतना ही अच्छा पुष्पित पल्लवित होगा। परन्तु बच्चे मात्र पौधे ही नहीं होते विशेष रूप से किशोर अवस्था के आस पास वह स्वयं भी चढ़ाते है। उन्हे अनियन्त्रित भी नहीं छोड़ा जा सकता। परिवार में उचित वातावरण पैदा करने के लिए माता–पिता विभिन्न एकाधिकारवादी जन्तात्रिंक व्यवस्थाओं का प्रयोग करते है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

शिक्षा में निम्नलिखित भाोद्यार्थियों ने अपने अध्ययन में योग के महत्व पर प्रका ा डाला जिसमें **भांकर (1995), कं ाल (1998), क्राइन (1999),चक्रवर्ती एस0 (2203), गोपाल (2009) एवं** संह, **एम. पी. (2002), कुमार, एम. (2008), हंसराज एवं दिव्य, शिखा (2011), खातून मुबीना सैयदा (2014), नेहा दूबे (2019)** आदि प्रमुख हैं।

समस्या कथन

''मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं भौक्षिक रुचि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन''

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

मुस्लिम बालिकाएंः

माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् मुस्लिम बालिकाओं से तात्पर्य उन बालिकाओं से है जो मुस्लिम समाज की कक्षा 11 से कक्षा 12 में अध्ययनरत् है।

पारिवारिक वातावरणः

वातावरण शब्द पर्यावरण का पर्याय है जो दो शब्दों से मिलकर बना है, परि और आवरण, चारों ओर का आवरण का अर्थ है ढ़का हुआ। अर्थात् वह वातावरण जो बालक के चारो ओर से ढ़के हुए रहता है। पारिवारिक वातावरण का अर्थ बालक के उस वातावरण से है जो उसे परिवार से मिलता है। इस वातावरण से बालक को स्नेह, प्रेम, संस्कार, अच्छी आदते एवं बुरी आदते और परम्पराये भी मिलती है। परिवार ही व्यक्ति को उच्च आदर्शो की ओर चलने के लिए प्रेरित करता है। किसी भी व्यक्ति के उच्च जीवन स्तर पर व्यक्तित्व के विकास के लिए परिवार का होना अति आवश्यक है। क्योंकि बालक का वृद्धावस्था तक विकास पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत ही होता है।

भौक्षिक रुचिः

रूचि एक मानसिक संरचना है, जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु से अपना लगाव या सम्बन्ध प्रकट करता है। ड्रेवर के अनुसार– ''रूचि अपने क्रियात्मक रूप में एक मानसिक संस्कार है।''क्रो व क्रो के अनुसार– ''रूचि वह प्रेरणा शक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति वस्तु या क्रिया की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है।''**क्रो एण्ड क्रो** – "रूचि वह अभिप्रेरक भाक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया की ओर ध्यान देने के लिए बाध्य करती है अथवा वह यह एक प्रभावात्मक अनुभूति है जो स्वयं क्रिया द्वारा अभिप्रेरित होती है। दूसरे भाब्दों में रूचि किसी क्रिया का कारण भी हो सकती है और उस क्रिया में भाग लेने का परिणाम भी"।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मुस्लिम बालिकाओं से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्याद f :–

100 मुस्लिम बालिकाओं का चयन करके उनको क्षेत्र एवं संकाय आदि क्षेत्रों में बांटा गया है।

उपकरण :–

पारिवारिक वातावरण – **डॉ0 हरप्रीत भाटिया एवं डॉ0 एन0 के0 चड्डा**

भौक्षिक रुचि – **एस0पी0कुलश्रेश्ठ**

तालिका संख्या – 1

मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सह–सम्बन्ध की स्थिति एवं प्रभाव

क्र०स०	समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता
1.	ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाएं	50	0ण0318	धनात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या –

तालिका संख्या 1 में मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को द ार्या गया है जिसमें ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.0318 प्राप्त हुआ है जो दोनों के मध्य धनात्मक सहसंबध को द ार्ता है अर्थात् इससे सिद्ध होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सह–सम्बन्ध की स्थिति एवं प्रभाव

क्र०स०	समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता
1.	भाहरी क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाएं	50	0ण1381	धनात्मक सहसम्बन्ध

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या –

तालिका संख्या 2 में मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को द ार्या गया है जिसमें भाहरी क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.1381 प्राप्त हुआ है जो दोनों के मध्य धनात्मक सहसंबध को द ार्ता है अर्थात् इससे सिद्ध होता है कि भाहरी क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या – 3

मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सह–सम्बन्ध की स्थिति एवं प्रभाव

क्र॰स॰	समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता
1.	विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाएं	50	0ण्1250	धनात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या –

तालिका संख्या 3 में मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को द ार्या गया है जिसमें विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.1250 प्राप्त हुआ है जो दोनों के मध्य धनात्मक सहसंबध को द र्ाता है अर्थात् इससे सिद्ध होता है कि विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या – 4

मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सह–सम्बन्ध की स्थिति एवं प्रभाव

क्र॰स॰	समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता
1.	कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाएं	50	0ण्0349	धनात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या –

तालिका संख्या 4 में मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को द ार्या गया है जिसमें कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.0349 प्राप्त हुआ है जो दोनों के मध्य धनात्मक सहसंबध को द र्ाता है अर्थात् इससे सिद्ध होता है कि कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।

निष्कर्ष

- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् भाहरी क्षेत्र की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी भौक्षिक रुचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पाठक, पी0 डी0 (2006–07)	:	भारतीय ि ाक्षा और समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
पाण्डेय राम ाकल (2006–07)	:	उदीयमान भारतीय समाज में ि ाक्षक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
पाण्डेय, के0 पी0, (2003)	:	भौक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा, अमित प्रका ान, मेरठ।
सिहँ, अरूण कुमार (2006)	:	मनोविज्ञान, समाज ाास्त्र तथा ि ाक्षा में भाोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
तरूण हरिवं ा (2000)	:	भारतीय ि ाक्षा तथा वि व की ि ाक्षा प्रणालियाँ, नई दिल्ली।
ढौंढ़ियाल, एस0 एन0 एवं पाठक, ए0 वी0(2003)	:	भौक्षिक अनुसंधान का विधि ाास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
गैरिट, हैनरी ई0 एवं बुडवर्थ आर0 (2007)		ि ाक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के सांख्यिकीय प्रयोग, कल्याणी पब्लि ार्स लुधियाना पेज – 247।